ONLY IAS BY

PHYSICS WALLAH

UPSC

SAMPOORNA

(2023-24)

GENERAL STUDIES

PRINTED NOTES

HINDI MEDIUM

विषय-सूची

1. प्रारंभिक पाषाण युग 1-10
- परिचय.....1
- प्रागैतिहासिक काल: 30,00,000BC–600BC 1
- ऐतिहासिक स्रोत.....2
- पुरापाषाण या पुराना पाषाण युग: 30,00,000 BC–10,000BC 3
- मेसोलिथिक संस्कृति या मध्य पाषाण युग.....8
- विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा) 10

2. नवपाषाण और ताम्रपाषाण संस्कृति.....11-18
- नियोलिथिक या नव पाषाण काल: 7000 ई.पू.-1000 ई.पू:.....11
- ताम्रपाषाण युग/ताम्र-पाषाण युग: 3500ई.पू.-1000ई.पू:.....16
- लौह युग (1000 ई.पू.-500 ई.पू.).....18

3. हड़प्पा सभ्यता.....19-33
- परिचय.....19
- किसी स्थल को हड़प्पा सभ्यता स्थल के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए जाँच सूची...19
- सिंधु घाटी सभ्यता: भूगोल, प्रसिद्ध स्थल और पुरातात्विक खोज.....19
- प्रारंभिक, विकसित और उत्तर हड़प्पा चरण के बीच संबंध.....21
- विकसित हड़प्पा बस्तियों की सामान्य विशेषताएं 22
- हड़प्पा शिल्प और तकनीक 23
- हड़प्पा सभ्यता की मुहरों और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध 24
- हड़प्पा नगरों द्वारा आयात 25
- लेखन की प्रकृति और उपयोग.....25
- हड़प्पा सभ्यता के दौरान तोलन और मापन ...26
- धर्म और आस्था तंत्र 26
- सामाजिक व्यवस्था.....26
- कृषि.....27
- हड़प्पा सभ्यता का पतन 27
- उत्तर हड़प्पा सभ्यता चरण.....28
- समकालीन सभ्यताओं से भिन्नता 28
- हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल 29

4. आर्य संस्कृति और पूर्व-वैदिक काल.....34-39
- वैदिक ग्रंथों के रचयिताओं पर वाद-विवाद....34
- भारतीय-आर्य.....34
- वैदिक साहित्य.....35
- ऋग्वैदिक संस्कृति या पूर्व-वैदिक संस्कृति 35
- ऋग्वेद में वर्ण व्यवस्था: दास और दास्यु.....36
- ऋग्वैदिक चरण के दौरान राजनीतिक संगठन.....37
- राजनीतिक विवाद.....37
- अर्थव्यवस्था.....38
- धर्म और कर्मकांड 38

5. उत्तर-वैदिक चरण.....40-43
- आर्यों का विस्तार 40
- लौह धातु का प्रयोग.....41
- बस्तियाँ और क्षेत्र 41
- वर्ण पदानुक्रम 41
- राजनीतिक व्यवस्था.....42
- अर्थव्यवस्था.....42
- धार्मिक आस्था और विश्वास तंत्र.....43

- उत्तर वैदिक चरण के दार्शनिक पहलू.....43

6. महाजनपदों का युग.....44-48

- भारत-गंगा के मैदानों में द्वितीय शहरीकरण के विकास के कारण.....44
- जनपद से महाजनपद तक.....44
- 16 महाजनपद.....45
- महाजनपदों की मूलभूत विशेषताएं.....48
- गण या संघ 48

7. बौद्ध और जैन धर्म.....49-65

- जागरण के कारण.....49
- हेटेरोडॉक्स संप्रदाय.....49
- आजीवक.....50
- अन्य नास्तिक मत 50
- जैन धर्म.....51
- बौद्ध धर्म.....55
- महात्मा बुद्ध का प्रारंभिक जीवन.....55
- बुद्ध की शिक्षाएँ.....56
- जैन धर्म और बौद्ध धर्म की तुलना.....65
- बौद्ध धर्म और जैन धर्म के बीच प्रमुख अंतर....65

8. पूर्व मौर्य काल का भारत.....66-68

- मगध महाजनपद के विकास के कारण.....66
- हर्यंक वंश 66
- शिशुनाग वंश.....67
- नंद वंश (362 ईसा पूर्व) 67

9. मौर्य साम्राज्य.....69-81

- फारसी आक्रमण 69
- भारत पर फारसी आक्रमण का प्रभाव.....69
- सिकंदर का भारत पर आक्रमण (327-325 ई.पू.) 69
- मौर्य काल.....71
- मौर्यों का राजनीतिक इतिहास.....72
- उत्तर मौर्य 75
- मौर्य प्रशासन.....75
- राजस्व और कृषि 76
- शिल्प और सामान 77
- व्यापार.....77
- सिक्के और मुद्रा 78
- सेना.....78
- जनगणना 78
- प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन 78
- भौतिक संस्कृति 79
- मौर्यकाल में कला और वास्तुकला.....79
- मौर्य साम्राज्य का पतन.....81

10. आक्रमण युग: मध्य एशिया से संपर्क.....82-87

- विदेशी आक्रमणकारी 82
- इंडो-यूनानी आक्रमणकारी.....82
- इंडो-यूनानी शासन का प्रभाव 82
- शक या सिथो -पार्थियन.....83
- कुषाण.....83
- पश्चिमी भारत के शक क्षत्रप 86
- क्षहरात राजवंश.....86

11. मौर्यों के बाद का भारत.....88-91

- शुंग 88
- दक्कन में सातवाहन साम्राज्य.....89
- सातवाहनों का राजनीतिक इतिहास.....89
- प्रशासन.....90
- आय 90
- वास्तुकला 90
- आर्थिक स्थिति 91

12. दक्षिण भारत का प्रारंभिक इतिहास.....92-97

- राजनीतिक इतिहास.....92
- चेर.....92
- चोल 93
- पांड्य.....93
- छोटे सरदार 94
- संगम साहित्य.....94

- संगम काल का प्रशासन 95
- समाज 95
- अर्थव्यवस्था 96
- विचारधारा और धर्म 96
- महिलाओं की स्थिति 97
- कला 97

13. गुप्त साम्राज्य 98-114

- गुप्त काल के स्रोत 98
- गुप्तवंश की उत्पत्ति एवं प्रमुख शासक 99
- गुप्त साम्राज्य का प्रशासन तंत्र 102
- अर्थव्यवस्था 103
- समाज 107
- धार्मिक विकास के प्रतिरूप 107
- कला और स्थापत्य 108
- साहित्य 109
- विज्ञान और गणित 110
- गुप्तों का पतन 112
- वाकाटक 112
- राजनीतिक इतिहास 112

14. हर्ष का उदय 115-118

- गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भारत 115
- मैत्रक 115
- मौखरी 115
- पुष्यभूति 116
- राजवर्धन (605–606 ई.) 116
- हर्षवर्धन 116
- हर्ष का प्रशासन 116
- प्रांतीय प्रशासन 117
- कर लगाना 117
- समाज 117
- धार्मिक नीति 118
- हर्ष के समय में कला और साहित्य का संरक्षण 118

15. पूर्व में साम्राज्य 119-121

- बंगाल 119
- पाल साम्राज्य 119
- पाल शासक 119
- धर्मपाल 119
- देवपाल 120
- धर्म के प्रति नीति 120
- असम 121
- ओडिशा 121

16. दक्षिण भारतीय साम्राज्य 122-130

- पल्लव 122
- वेंगी के पूर्वी चालुक्य 129
- बनवासी के कदंब 129
- मैसूर के पश्चिमी गंग 130

17. प्राचीन इतिहास की विरासत: मध्यकाल की ओर संक्रमण 131-135

- समाज में परिवर्तन 131
- दर्शन 132
- पड़ोसी देशों की संस्कृति पर प्रभाव 133
- विज्ञान और सभ्यता में विरासत 134
- प्राचीनकाल से मध्यकाल 134

18. प्राचीन काल में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली 136-141

- वैदिक काल 136
- वैदिक युग में विवाह के प्रकार 137
- वैदिक ग्रंथों में नदियाँ 137
- जैन धर्म और बौद्ध धर्म 137
- बोधिसत्व (दुनिया के कल्याण के लिए काम करके निर्वाण प्राप्त करने वाला व्यक्ति) 138
- मगध साम्राज्य 138
- कुषाण साम्राज्य और सातवाहन 139
- संगम युग 140
- संगम युग में सिंचाई से संबंधित शब्द 140
- गुप्त काल 140
- गुप्तोत्तर काल और अन्य पद 141

19. समयरेखा: प्राचीन भारत का इतिहास 142-150

1 प्रारंभिक पाषाण युग

परिचय

- 19वीं शताब्दी के बाद से भारतीय उपमहाद्वीप में कई प्रागैतिहासिक स्थलों की खोज की गई है, और नए दृष्टिकोणों और विचारों ने पाषाण युग (मानव इतिहास का वह काल जो सबसे लंबे समय तक चला) के बारे में हमारे ज्ञान में वृद्धि की है।
- सबसे प्रचुर और महत्वपूर्ण स्रोत इतिहास के तीन खंड हैं।
- **प्रागैतिहास (Prehistory):** उन घटनाओं का अध्ययन है जो लेखन कला के विकास से पहले हुई थी, जिसे आमतौर पर तीन पाषाण युगों द्वारा दर्शाया गया है।
- **आद्य-इतिहास (Proto-history):** जब किसी सभ्यता में लेखन कला का विकास नहीं हुआ था, लेकिन इसे एक समकालीन साक्षर सभ्यता के लिखित अभिलेखों में दर्ज किया गया है, तो यह प्रागैतिहास और इतिहास के बीच की अवधि को दर्शाया है। उदाहरण के लिए हड़प्पा सभ्यता की लिपि अभी तक कोई नहीं पढ़ पाया है।
- **इतिहास (History):** लेखन के आविष्कार के बाद अतीत का अध्ययन है और लिखित और पुरातात्विक साक्ष्यों का उपयोग करके साक्षर समाजों का अध्ययन है।

प्रागैतिहासिक काल: 30,00,000BC – 600BC

- **यह 5 कालों से मिलकर बना है–** पुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण, ताम्रपाषाण और लौह युग।
- **इस काल का कोई लिखित अभिलेख** उपलब्ध नहीं है।
- **पुरातात्विक अवशेष:** प्रागैतिहासिक लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पत्थर के औजार, मिट्टी के बर्तन, कलाकृतियां और धातु के उपकरण हैं।
- **रॉबर्ट ब्रूस फूट ने भारत में संभवत:** पहला पुरापाषाण उपकरण "पल्लावरम हस्तकुल्हाड़ी" खोजा था। आर.बी. फूट को "प्रागैतिहासिक पुरातत्व के जनक" के रूप में जाना जाता है। रॉबर्ट ब्रूस फूट भारतीय प्रागैतिहास का प्रारंभिक, गहन अध्ययन करने के लिए श्रेय के पात्र हैं।
- **सर मोर्टिमर व्हीलर:** भारत की पूर्व-ऐतिहासिक संस्कृतियों और उनके अनुक्रम के बारे में हमारे ज्ञान में बढ़ोत्तरी की।

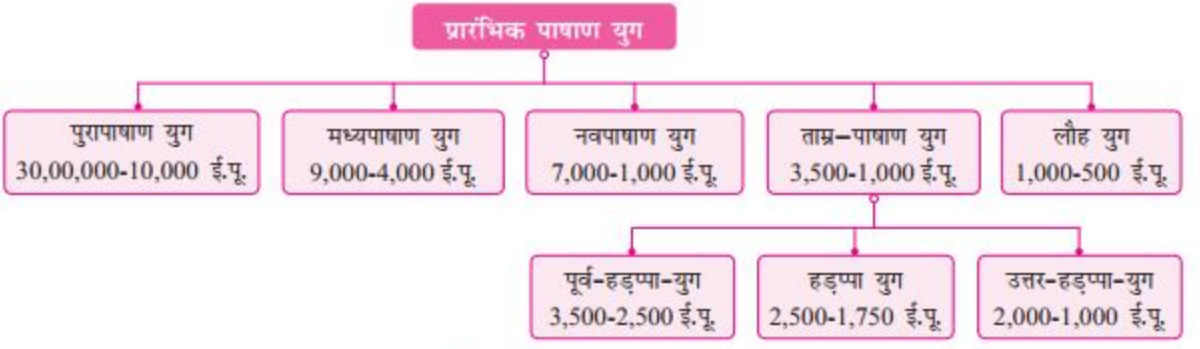

चित्र 1.1 प्रागैतिहासिक काल

ऐतिहासिक स्रोत

स्रोत	साक्ष्य	जानकारी
सामग्री अवशेष	• **रेडियो-कार्बन डेटिंग:** यह किसी वस्तु की उम्र निर्धारित करने के लिए एक विधि होती है। • **डेंड्रो-कालक्रम:** पेड़ों के वलयों (जिन्हें विकास वलय भी कहा जाता है) को उनके बनने के सटीक वर्ष का निर्धारण करने की वैज्ञानिक विधि। • **निर्माण संरचनाएं:** दक्षिणी भारत के भव्य पत्थर के मंदिर; पूर्वी भारत के ईंट मठ; टीले की ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज खुदाई; महापाषाण (दक्षिण भारत)	• जीवन शैली के लगभग हर पहलू जैसे, मिट्टी के बर्तनों का उपयोग, गृह निर्माण का तरीका, कृषि (उत्पादित अनाज), पालतू जानवर, औजारों के प्रकार, हथियार आदि और समय और स्थान में प्रचलित अंतिम संस्कार की प्रथाएं। • **लंबवत उत्खनन:** भौतिक संस्कृति का कालानुक्रमिक अनुक्रम प्रदान करता है। • **क्षैतिज उत्खनन:** संस्कृति विशेष का पूरा परिचय प्रदान करता है।
सिक्के	• सिक्कों के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (Numismatics)** कहा जाता है। • **खुदाई** में सिक्कों को **एकत्र किया गया** और पूरे देश और **बाहर के विभिन्न संग्रहालयों** में **सूचीबद्ध किया गया।**	• आरंभिक सिक्कों में अधिक प्रतीकों का प्रयोग नहीं किया गया है; बाद के सिक्कों में राजाओं या जारीकर्ता (गिल्ड / व्यापारियों), देवताओं या तिथियों के नाम का उल्लेख किया गया है; यह कालक्रम के साथ धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास के लेखन में मदद करता है। • ऐसे स्थानीय और सीमा-पार लेनदेन जिनमें इन सिक्कों प्रयोग हुआ है, हमें विभिन्न शासक राजवंशों और उनके शासन के बारे में बताते हैं। • सिक्कों में प्रयुक्त धातु और संख्या किसी साम्राज्य में व्यापार, वाणिज्य और धन के स्तर को इंगित करती है। • गुप्तकाल के बाद सिक्कों की कम संख्या उस अवधि में व्यापार और वाणिज्य के पतन का संकेत करते हैं।
शिलालेख	• **पुरालेख विद्या (Epigraphy):** अभिलेखों का अध्ययन • **पुरालेखन (Palaeography):** अभिलेखों तथा अन्य अभिलेखों पर पुराने लेखों का अध्ययन। • मुहरों, पत्थर के खंभों, चट्टानों, तांबे की प्लेटों, मंदिर की दीवारों और ईंटों या तस्वीरों पर खुदे हुए शिलालेख। • सबसे पहले प्राकृत में (300 ईसा पूर्व), फिर संस्कृत में और उसके बाद क्षेत्रीय भाषाओं में।	• चित्रात्मक हड़प्पा शिलालेखों को **अभी पढ़ा जाना बाकी है।** • **दक्षिण भारत:** मंदिर की दीवारों पर शिलालेख। • शिलालेखों ने विभिन्न सूचनाओं जैसे **शाही फरमानों और सामाजिक, धार्मिक और प्रशासनिक मामलों (जैसे, अशोक के शिलालेख) के बारे में निर्णयों को अधिकारियों और सामान्य रूप से लोगों तक पहुँचाया।** • **अशोक के शिलालेख:** प्रयुक्त लिपियाँ - ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक और आरमेइक। • दान, भूमि अनुदान, और राजाओं और विजेताओं की उपलब्धियाँ (समुद्रगुप्त और पुलकेशिन द्वितीय आदि)।
साहित्यिक स्रोत	• चार **वेद**, **रामायण** और **महाभारत**, **स्मृतियाँ** और **धर्मसूत्र**, **महाकाव्य**, जैन और बौद्ध ग्रंथ, कविता, संगम साहित्य, **नाटक** आदि।	• भारत में, सबसे पुरानी पांडुलिपियां सनौबर की छाल और ताड़ के पत्तों पर लिखी गई थीं। • कौटिल्य का **'अर्थशास्त्र'** एक राजा और उसकी, अर्थनीति, प्रशासन और बड़े पैमाने पर समाज से संबंधित मामलों की विस्तृत जानकारी देता है।

		• **"पुराण"** गुप्त शासन तक वंशवादी इतिहास की जानकारी प्रदान करते हैं। • ये स्रोत भाषा, लिपि और लेखन की शैली के उपयोग के बारे में भी संकेत देते हैं। • **राजतरंगिणी:** यह कल्हण द्वारा लिखित प्रसिद्ध पुस्तक है और इसमें 12वीं शताब्दी CE कश्मीर के सामाजिक और राजनीतिक जीवन को दर्शाया गया है। • **संगम साहित्य:** यह प्राचीनतम दक्षिण भारतीय साहित्य है, जो एक साथ एकत्र हुए कवियों (संगम) द्वारा निर्मित है और तमिलनाडु के डेल्टा में रहने वाले लोगों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है। • **कालिदास की साहित्यिक कृतियां:** महान कवि कालिदास की रचनाओं में काव्य और नाटक शामिल हैं, जिनमें अभिज्ञान शाकुंतलम सबसे महत्वपूर्ण हैं।
विदेशी विवरण	• इतिहासकारों, राजनयिकों, तीर्थयात्रियों या नाविकों/खोजकर्ताओं के रूप में यूनानी, रोमन या चीन के लोगों का विवरण।	• **सिकंदर का आक्रमण:** ग्रीक स्रोतों के आधार पर पूरी तरह से दोबारा लिखा गया। • **मेगास्थनीज का "इंडिका"** मौर्य काल के बारे में जानकारी प्रदान करता है। • **प्लिनी का "नेचुरेलिस हिस्टोरिया":** भारत और रोमन साम्राज्य के बीच व्यापार असंतुलन का लेखा-जोखा प्रदान करता है। • **फाह्यान:** एक बौद्ध यात्री, गुप्तकाल की जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। • **ह्वेन -त्सांग : बौद्ध तीर्थयात्री, ने भारत का दौरा किया और राजा** हर्षवर्धन के शासनकाल और नालंदा विश्वविद्यालय की शान के द्वारा भारत का विवरण प्रस्तुत किया।

भारतीय पाषाण युग को मोटे तौर पर भूवैज्ञानिक युग, पत्थर के औजारों के प्रकार और तकनीक और जीवनयापन के स्तर के आधार पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

1. **पुरापाषाण युग या पैलिओलिथिक एज**
2. **मध्य पाषाण युग या मेसोलिथिक एज**
3. **नव पाषाण युग या नियोलिथिक एज**

पुरापाषाण या पुराना पाषाण युग: 30,00,000 BC–10,000BC

- पाषाण युग का पहला चरण, जो प्लेइस्टोसिन या हिम युग के दौरान उभरा, पुरापाषाण युग के रूप में जाना जाता है।
- पुरापाषाण संस्कृतियाँ प्लेइस्टोसिन भूवैज्ञानिक युग की हैं, जबकि उत्तर पाषाण और नवपाषाण संस्कृतियाँ होलोसीन युग की हैं।
- पाषाण युग के पुरापाषाण और नवपाषाण काल को 1863 में जॉन लुबॉक द्वारा दो समूहों में विभाजित किया गया था।
- एडुआर्ड लार्टेट ने कुछ साल बाद पुरापाषाण को आंशिक रूप से विभिन्न उपकरण प्रकारों से जुड़े जीवों में भिन्नता के आलोक में निम्न, मध्य और उच्च पुरापाषाण काल में विभाजित करने का प्रस्ताव दिया।

भारत में पुरा पाषाण युग के प्रसिद्ध स्थल

- सोन घाटी और पोतवार पठार
- उत्तर भारत में शिवालिक की पहाड़ियाँ

भारत में निम्न पुरापाषाण युग

- **होलोसीन सीमा के अपवाद के साथ, उपमहाद्वीप की पाषाण युग की संस्कृतियाँ** एक ही रेखा में समान रूप से और व्यवस्थित ढंग से विकसित नहीं हुईं। **उनकी कुछ विशेषताएं क्षेत्रीय रूप से भिन्न होती हैं**, और उनकी तिथियों की एक विस्तृत श्रृंखला होती है। सिंधु और गंगा जलोढ़ मैदानों को छोड़कर, यह लगभग पूरे भारत देश में पाई जाती हैं।

- **नेवासन उद्योग का नाम नेवासा के स्थान के नाम पर रखा गया है**, जहां प्रमुख पुरातत्वविद् एच. डी. सांकलिया ने मध्य पुरापाषाण युग की कलाकृतियों का पता लगाया था।
- दक्षिण भारत में, मध्य पुरापाषाण संस्कृति को एक शल्क उपकरण उद्योग द्वारा पहचाना जाता है। विशाखापत्तनम तट पर, क्वार्टजाइट, चर्ट और क्वार्टज का उपयोग अक्सर पत्थर के औजार बनाने के लिए किया जाता था।

NEOLITHIC CULTURES

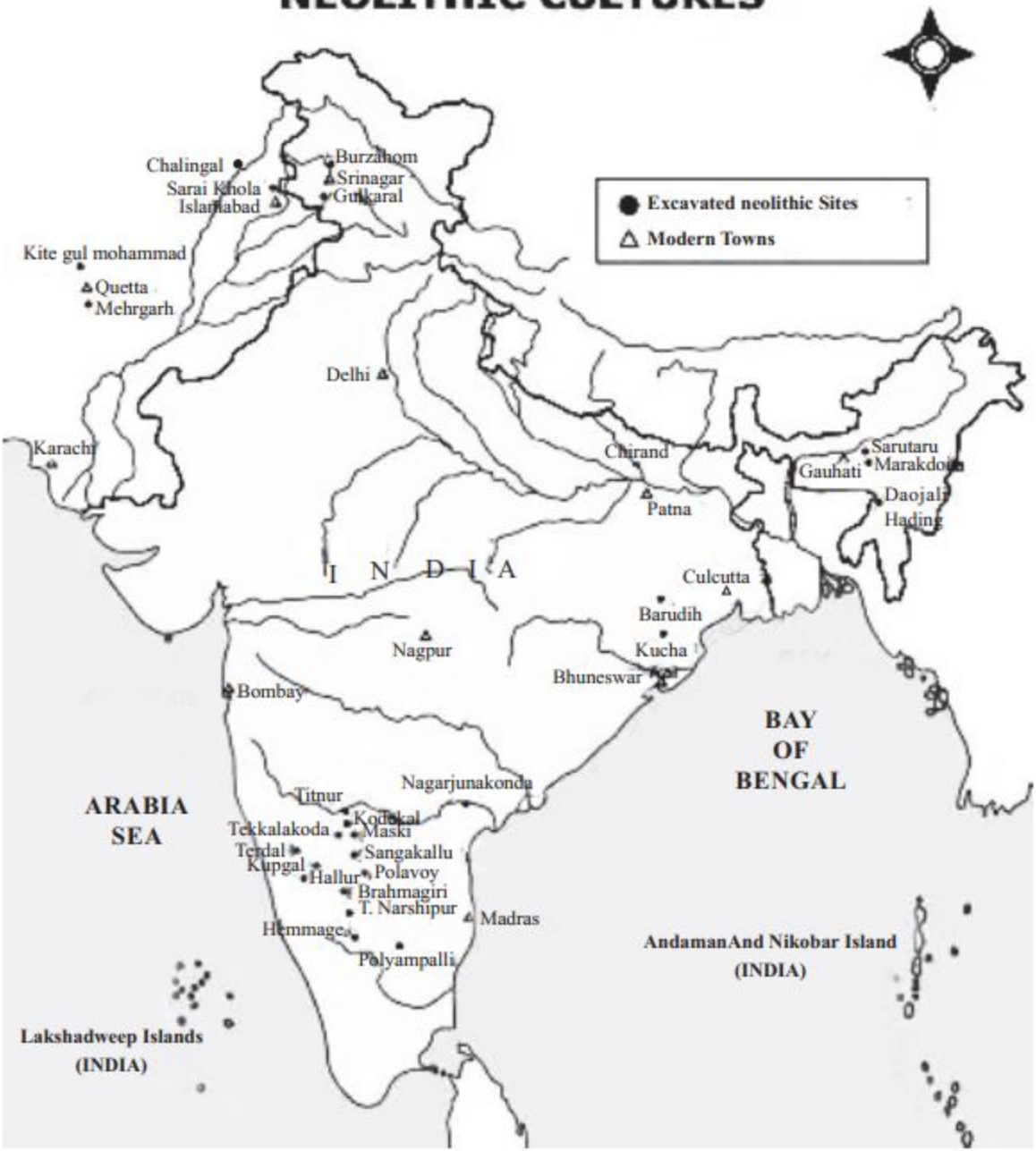

- **हरियाणा के फतेहाबाद जिले में, भिराना** हाल ही में खोजा गया एक पुरातात्विक स्थल है। लोग गड्ढेयुक्त घरों में रहते थे जिनका आकार 230 से 340 सेमी. व्यास और 34 से 58 सेमी. गहराई तक होता था। आवासीय गड्ढों के साथ-साथ औद्योगिक गतिविधियों के लिये गड्ढे, बलि और कूड़ा-कचरा भी मिला है।
- **दक्षिणी उत्तर प्रदेश में विंध्य सीमाएँ,** जहाँ बेलन, अदवा, सोन, रिहंद, गंगा, लापारी और पैसुनी नदियों में अन्वेषणों के परिणामस्वरूप 40 से अधिक नवपाषाण स्थलों की खोज की गई है, कृषि-देहाती समाजों का एक और प्रारंभिक केंद्र थे।
  - कोल्डीहवा, महागारा, पचोह और इंदारी सहित कई उत्खनन स्थलों में नवपाषाण स्तर पाए गए हैं।

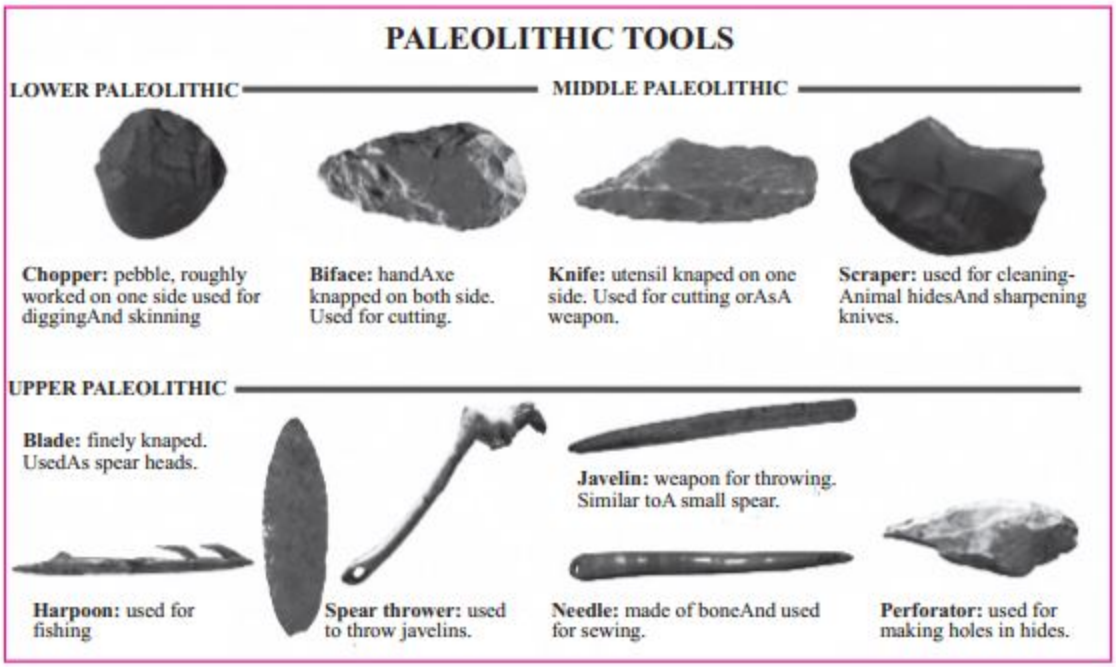

उत्तर पुरापाषाण स्थल:

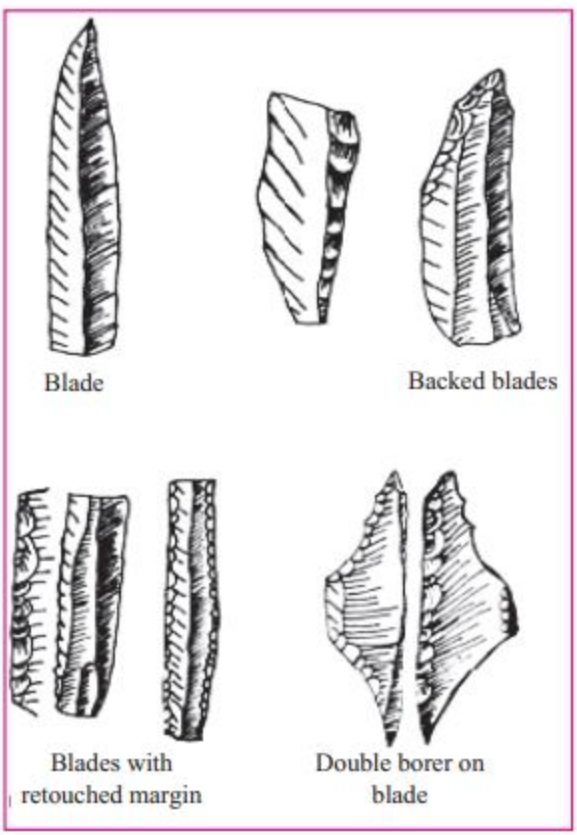

- **समानांतर पक्षीय फलक वाले औजारों का उत्पादन उत्तर पुरापाषाण की एक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि थी।** दफन किए जाने वालों की संख्या में भी इजाफा हुआ है। **छोटे उपकरणों की ओर रुझान** पर्यावरणीय परिवर्तनों की प्रतिक्रियाओं के परिणामस्वरूप हुआ होगा।
- **शल्क-ब्लेड संस्कृति:** शल्क-ब्लेड से बने औजारों की अधिकता के कारण।
- **उत्तर भारत में कश्मीर उत्तर पुरापाषाण लगभग 18,000 साल पहले का है**, जो एक गर्म वातावरण के आगमन के साथ मेल खाता है।
- बढ़ती शुष्कता के कारण थार में पिछले चरण की तुलना में कम उत्तर पुरापाषाण स्थल पाए जाते हैं।
  - बुद्ध पुष्कर में झील के आसपास के क्षेत्र में अभी भी लोगों का कब्जा था।
- **विंध्य** के शैलाश्रयों और **गुफाओं में उत्तर पुरापाषाणकालीन आश्रय स्थलों की खोज की गई है।**
- बेलन घाटी में 10,000 साल पहले सोन घाटी में उत्तर पुरापाषाण काल से संबंधित स्थल पाया गया था।
- ऐसा प्रतीत होता है कि बेलन घाटी में चोपानी मांडो एक मानव बस्ती थी जिसमें **उत्तर पुरापाषाण काल से नवपाषाण तक सांस्कृतिक प्रगति हुई थी।**
- **छोटानागपुर क्षेत्र** और राजमहल पहाड़ियों के दामिन क्षेत्र में **कई उत्तर पुरापाषाण स्थल हैं।** इनमें मुंगेर जिला (बिहार) का पैसरा भी शामिल है।